हिंदी विश्व

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र

विश्व हिंदी सम्मेलन
मॉरीशस, 18-20 अगस्त, 2018

गोस्वामी तुलसीदास नगर, मॉरीशस | रविवार, 19 अगस्त 2018 | अंक - 2

हिंदी को बढ़ाने की जिम्मेदारी भारत की: सुषमा स्वराज

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा है कि हिंदी को बढ़ाने की जिम्मेदारी भारत की है। श्रीमती स्वराज आज 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में प्रस्तावना वक्तव्य दे रही थीं। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में दो भाव एक साथ उभर रहे हैं। पहला शोक का भाव और दूसरा संतोष का भाव। अटल जी के निधन पर शोक की छाया इस सम्मेलन पर है किंतु दूसरा संतोष का भाव भी है कि समूचा हिंदी विश्व अटल जी को श्रद्धांजलि देने के लिए यहाँ एकत्र है। इसीलिए उद्घाटन सत्र के बाद श्रद्धांजलि सत्र रखा गया है। श्रीमती स्वराज ने कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलन तीन बार भारत में हो चुका है और मॉरीशस में भी तीसरी बार हो रहा है। दो सम्मेलन गिरमिटिया देशों में और बाकी के तीन में एक-एक बार अमेरिका, ब्रिटेन और दक्षिण अफ्रीका में हुए हैं। विदेश मंत्री ने कहा, दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन की जिम्मेदारी मिलने पर उन्होंने पहले के विश्व हिंदी सम्मेलनों की समीक्षा की तो पाया कि सभी सम्मेलन साहित्य की विधाओं पर केंद्रित थे इसलिए उन्होंने भोपाल में संपन्न दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय भाषा को बनाया। विचार यह था कि भाषा और बोली जहाँ बची हुई है, उसे कैसे बढ़ाया जाए और जहाँ लुप्त हो रही है, उसे कैसे बचाया जाय। विदेश मंत्री ने कहा कि गिरमिटिया देशों में लुप्त हो रही भाषा को बचाने की जिम्मेदारी भारत की है। भारत ने वह जिम्मेदारी संभाली है। इसीलिए भोपाल के सम्मेलन में भाषा पर केंद्रित 12 सत्र रखे गए थे। उस सम्मेलन का प्रतिवेदन तैयार करने के लिए विदेश मंत्री ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के प्रति आभार प्रकट किया। श्रीमती स्वराज ने कहा, "हमने विश्व हिंदी सम्मेलनों की अनुशंसाओं के अनुपालन पर खास ध्यान दिया है। हर तीन महीने में अनुशंसा अनुपालन समिति की बैठक होती है। पिछली अनुशंसाओं को 'भोपाल से मॉरीशस' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है।" श्रीमती स्वराज ने कहा कि हर विश्व हिंदी सम्मेलन में दो प्रस्ताव पारित किए जाते रहे हैं। एक यह कि मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय का भवन हो। वह प्रस्ताव अनुपालित हो गया है और इसी वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय के भवन का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी के हाथों संपन्न हो चुका है। दूसरा प्रस्ताव हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का रहा है। उसमें मुख्य समस्या यह है कि समर्थक देशों को संबंधित व्यय वहन करना होगा। यदि भारत को व्यय वहन करना होता तो 400 करोड़ रुपए देकर भी हम उसे हासिल कर लेते। भारतीय विदेश मंत्री ने उम्मीद जताई कि जब योग दिवस के लिए भारत 177 देशों का समर्थन हासिल कर सकता है कि संयुक्त राष्ट्र की भाषा के लिए 129 देशों का समर्थन भी वह हासिल कर लेगा। भारतीय विदेश मंत्री ने विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रतिभागियों से आग्रह किया कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हर शुक्रवार को आनेवाले हिंदी विश्व समाचार को अधिक से अधिक सुना जाए ताकि उसे दैनिक करने की राह आसान हो। श्रीमती स्वराज ने कहा कि भाषा के बाद हमने सोचा कि अगला पड़ाव संस्कृति पर ले जाया जाए। इसलिए 11वे विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति रखा गया।

उन्होंने कहा कि गिरमिटिया देशों में संस्कृति का गौरव कायम है। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ अभी अफसोस कर रहे थे कि वे हिंदी भलीभांति नहीं बोल पाते हैं किंतु उन्होंने अपनी पत्नी से कहा है कि संक्रांति के दिन वे खिचड़ी ही खाएंगे। भारत में भी संक्रांति के दिन खिचड़ी खाई जाती है। संस्कृति को बचाने की छटपटाहट उनमें दिखाई दी। श्रीमती स्वराज ने सम्मेलन लोगो पर बनी एनिमेशन फिल्म का हवाला देते हुए कहा कि भारत का मोर आएगा और डोडो को बचाएगा। इस फिल्म में दिखाया गया है कि मारीशस का राष्ट्रीय पक्षी जब डूबने लगता है तो भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर आकर उसे बचाता है। फिर दोनों नृत्य करते हैं।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में ही भारत के दिवंगत राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का सामूहिक मौन रखा गया। उसके बाद मॉरीशस व भारत का राष्ट्रगान हुआ। भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज तथा मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विदेशी विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना की। उसके बाद महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के विद्यार्थियों ने हिंदी गान प्रस्तुत किया। मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन ने स्वागत भाषण किया। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने विश्व हिंदी सम्मेलन पर दो डाक टिकट जारी किए। उन्होंने सम्मेलन स्मारिका का भी लोकार्पण किया। गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा ने विश्व हिंदी सम्मेलन पर निकले 'गगनांचल' के विशेषांक का, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल व कवि केशरीनाथ त्रिपाठी ने 'दुर्गा' पत्रिका का, भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने 'राजभाषा भारती' पत्रिका विशेषांक का, मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन ने विश्व हिंदी सचिवालय की पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' पत्रिका का, भारत के विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर ने अभिमन्यु अनत की पुस्तक 'प्रिया' का और भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी. के. सिंह ने 'भोपाल से मॉरीशस तक' पुस्तक का लोकार्पण किया। समारोह का संचालन प्रो. कुमुद शर्मा और माधुरी रामधारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के.सिंह ने किया।

उद्घाटन सत्र में बाएं से विदेश राज्य मंत्री जनरल वी के सिंह, विष्णु लक्ष्मी नारायडु, केशरीनाथ त्रिपाठी, अनिरुद्ध जगन्नाथ, सुषमा स्वराज, प्रवीण कुमार जगन्नाथ, इवैन कोलेन डेवेल्लू, मृदुला सिन्हा, लीला देवी दुकन लछुमन और किरण रिजुजू

दीप जलाकर उद्घाटन करती भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीला देवी दुकन लछुमन और गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा

अटल हुए ध्रुवतारा : केशरीनाथ त्रिपाठी

वाजपेयी जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सत्र

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और हिंदी के वरिष्ठ कवि केशरीनाथ त्रिपाठी ने कहा है कि अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से शब्द नि:शब्द हो गए हैं। वाणी मूक हो गई है। श्री त्रिपाठी आज 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सामान्यत: आकाश में उड़ते हुए पंछी शाम को बसेरे पर लौट आते हैं लेकिन 16 अगस्त 2018 की शाम को भारत के राजनीतिक गगन में उड़ता हुआ विशाल गरुड़ अपने नश्वर शरीर को त्याग कर अमृतत्य के मार्ग पर बढ़ चला और नभ में राजनीतिक सिद्धांतों का ध्रुवतारा बन गया। उन्होंने कहा कि अटल जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को गौरवशाली स्थान दिलाने के लिए हिंदी में भाषण दिया था। उस समय देश का स्वाभिमान जाग उठा था। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को मान्यता दिलाने के सवाल पर उन्होंने कहा था वातावरण का निर्माण होने दो, इसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है, वह आज भी जारी है। श्रद्धांजलि सत्र को संबोधित करते हुए अनिरूद्ध जगन्नाथ ने कहा – मैं अपने और अपने देश की ओर से अपने करीबी दोस्त और सहयोगी के लिए शोक व्यक्त करता हूँ। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। वे भारत को शांति और अमन का देश बनाना चाहते थे। अटल जी दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को अटल बंधन में बाँधने के लिए प्रयत्नशील रहे।

चीन में हिंदी के पुरोधा, जियांग चीग खेईना ने कहा – मैं चीन में हिंदी का सैनिक हूँ। मैं अटल जी का अनुवादक था। वे भारत और चीन के बीच मधुर संबंध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे। उनसे हमने प्रेरणा पाई है। हिंदी भाषा में भारतीय संस्कृति की सुगंध है जिसका अनुभव मैंने अटल जी की कविता का अनुवाद करते हुए किया। गोवा की राज्यपाल, मृदुला सिन्हा ने अटल जी की महानता के उदाहरण प्रस्तुत किए। तजाकिस्तान के हिंदीसेवी जावेद ने कहा कि हम हिंदी के महायज्ञ में आरती देने आए हैं। पोर्ट ऑफ स्पेन के रामप्रसाद परशुराम ने कहा कि जो देशसेवा में जीवन बिताते हैं, वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। अमेरिका के प्रो. सुरेन्द्र गंभीर ने कहा कि अटल जी की कविता बचपन से गुनगुनाता रहा हूँ। उनकी विनोदपूर्ण प्रतिक्रिया के कई संस्मरण हमारी चेतना में आज भी मौजूद हैं। के.सी. त्यागी, सांसद ने कहा कि अटल जी दल के नहीं, दिलों के नेता थे। अमेरिका की डॉ. मृदुल कृति ने कहा कि उनकी कविता से बहता खून जम जाता था वहीं जमा खून बह जाता था। नीदरलैंड की डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने कहा कि अटल जी विदेह अवस्था में हिंदी के शरीर में शब्दों के संसार के माध्यम से समा गए हैं। भर्तृहरि महताब, सांसद ने कहा कि अटल जी ने मुझे गांधीयन समाजवाद को समझाया और कहा कि दोनों धाराएं समानांतर होने पर ही देश का विकास होगा। उनकी भाषा की पकड़ और देश को ऊँचाइयों पर ले जाने की कल्पना हमें प्रेरणा और मार्गदर्शन देती रहेगी। रूस के डॉ. अन्ना चेर्नोकोवा ने कहा कि प्रधानमंत्री तो सभी बन सकते हैं लेकिन कविताएं केवल अच्छे लोग ही लिखते हैं। दक्षिण कोरिया की डॉ. युंग ली, जापान के प्रो. मचिदा, मॉरीशस की हिंदीसेवी डॉ. विनोदबाला अरुण, ब्रिटेन से आए निखिल कौशिक ने भी अटल जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सत्र का संचालन कवि अशोक चक्रधर ने किया।

कोलकाता में अटल जी के एकल काव्य पाठ की याद-पृष्ठ-2

मॉरीशस में अटल साइबर टावर

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने आज घोषणा की कि मॉरीशस के साइबर टावर को अब अटल बिहारी वाजपेयी टावर के नाम से जाना जाएगा। श्री जगन्नाथ आज 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में उद्घाटन वक्तव्य दे रहे थे। उन्होंने कहा कि अटल जी के निधन से हिंदी जगत का अनमोल हीरा खो गया है। भारत माता ने एक वीर राजनेता, बुद्धिमान कर्तव्यपूर्ण हिंदी सेवी खो दिया है। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में मॉरीशस के साथ संबंधों को बहुत मजबूती दी थी। मॉरीशस में साइबर टावर भारत के सहयोग से ही बना था। साइबर टावर का उद्घाटन अटल जी ने ही किया था। इसलिए मॉरीशस सरकार ने निश्चय किया है कि मॉरीशस के साइबर टावर का नामकरण अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर किया जाएगा। उन्होंने वाजपेयी जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके देश ने अपने राष्ट्रीय झंडे और तिरंगे को आधा झुका दिया था। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक हमारा और भारतीय झंडा आधा झुका रहेगा। निजी क्षेत्र से भी यह अपील की गई है कि वे इस दौरान झंडों को आधा झुका लें।

कोलकाता में अटलजी के एकल काव्य पाठ की याद

डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी

'हमारे लिए यह देश जमीन का टुकड़ा नहीं है, यह जीता-जागता राष्ट्र-पुरुष है। कभी आपने भारत के नक्शे की तरफ गौर से देखा है? हिमालय इसका मस्तक है, गौरी शंकर शिखा है, कश्मीर इसका किरीट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं। दिल्ली इसका दिल है, विन्ध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है, पूर्वी भाग और पश्चिमी भाग दो विशाल जंघाएं हैं, कन्याकुमारी इसके पंजे हैं। सागर चरण धुलाता है, मलयानिल विजन डुलाता है। पावस के काले-काले मेघ इसकी कुन्तल केशराशि है, चांद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं, वसन्त इसका श्रृंगार करता है। यह देवताओं की भूमि है, आचार्यों की भूमि है, तीर्थंकरों की भूमि है। यह संन्यासियों की भूमि है, सेनानियों की भूमि है। यह सम्राटों की भूमि है। यह वंदन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है। यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है। इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है, इसका कंकड़-कंकड़ शंकर है। इसका कण-कण हमें प्यारा है, इसका जन-गण-हमारा दुलारा है।'

यद्यपि उपर्युक्त पंक्तियां एक शीर्ष राजनेता के व्याख्यान का अंश है तथापि इसका प्रत्येक वाक्य प्रखर राष्ट्रीयता, देश-प्रेम एवं काव्यात्मकता से आपूरित है। अपने देश के विभिन्न प्रदेशों, जल-थल-पर्वत तथा कण-कण के प्रति वक्त का गहन अनुराग जिन प्रतीकों, उपमाओं तथा विशिष्ट भाषा के साथ व्यक्त हुआ है उसे पढ़ने-सुनने-समझने वाला सहृदय सहज ही कह सकता है कि इन पंक्तियों का सर्जक निश्चित रूप से कोई कवि ही होगा।

संभवत: यही कारण था कि आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व मैंने यह उद्धरण अपनी उस डायरी के पहले पन्ने पर लिख लिया था, जिसमें अनेक कवियों की पसंदीदा कविताएं लिपिबद्ध हैं। अच्छी कविताएं नोट करने वाला तथा उन्हें याद करने का मेरा यह शौक तब नया-नया विकसित हुआ था। उस समय मुझे यह ज्ञात नहीं था कि डायरी के इस पन्ने पर कभी उस विशिष्ट व्यक्ति की भी नज़र पड़ेगी जिसका यह वक्तव्य है। मैंने यह भी नहीं सोचा था कि भविष्य में कभी मुझे उसी व्यक्तित्व के इस सवाल का सामना करना पड़ेगा कि 'बड़े कवियों की प्रभावी कविताओं की इस डायरी के आरम्भ में यह गद्यांश क्या असंगत नहीं है ?'

प्रश्नकर्ता थे भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष, सम्मोहक वक्ता तथा ओजस्वी कवि श्री अटल बिहारी वाजपेयी। और यह प्रश्न किया गया था मेरे श्रद्धेय गुरु आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के सामने। यह बात अगस्त 1994 की है। मैंने सहज भाव से भोला सा उत्तर दिया था, 'राष्ट्र के प्रति आपके ये भावोद्गार मुझे बहुत प्रिय हैं, पूरा उद्धरण राष्ट्र-वंदना में लिखी गयी कविता ही है। यह अभिव्यक्ति कई बड़ी कविताओं से भी अधिक प्रभावशाली है।' मेरे उत्तर पर अटलजी की चिर-परिचित मुस्कान के साथ आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की टिप्पणी मुझे याद है। शास्त्रीजी ने कहा, 'अटलजी आपका आशीर्वाद इसे मिलना चाहिए, आप इसी पृष्ठ पर उद्धरण के नीचे अपने हस्ताक्षर कर इसे स्नेहाशीष दें।' अटलजी की यह सदाशयता ही थी कि उन्होंने तुरंत कलम निकालकर मेरी डायरी के उस पन्ने पर अपने हस्ताक्षर कर दिए। 13 अगस्त 1994 की सुबह दिया गया यह ऑटोग्राफ मेरी उस पुरानी डायरी में आज भी अंकित है। अटलजी के कलकत्ता आगमन का मुख्य हेतु था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में उनके 'एकल काव्य-पाठ' का आयोजन। इस एकल-काव्य-पाठ हेतु अटलजी पूरी तैयारी से कलकत्ता आए थे। उस समय वे लोक-सभा में प्रतिपक्ष के नेता थे तथा कलकत्ते में श्री घनश्याम बेरीवाल के चित्तरंजन एवेन्यू वाले आवास पर ही ठहरते थे। आदरणीय शास्त्री जी ने एक दिन पूर्व मुझसे कहा था कि 'सुबह (13.8.94) अटलजी से मिलने जाऊंगा- तुम भी आ जाना।' 'बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फासला रखना' पंक्ति के प्रभाववश में इस तरह की मुलाकातों से सदैव परहेज करता हूं- लेकिन गुरु के आदेश का पालन तो करना ही था। मेरे पहुंचते ही शास्त्रीजी ने परिचय कराते हुए अटलजी को बताया कि आपकी कई कविताएं इनके माध्यम से प्राप्त हुई हैं। वाजपेयी जी स्वाभाविक रूप से प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा-'मेरी कविताएं मेरे पास नहीं हैं, मित्रों के पास हैं।' अटलजी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा-'सुबह से अपनी एक रचना की चर्चित पंक्ति दोहरा रहा हूँ-पूरी कविता याद नहीं आ रही।' मेरे पूछने पर उन्होंने पंक्ति पढ़ी-'टूट सकते है, मगर झुक नहीं सकते।' मैंने कहा, 'कहीं पढ़ी तो मैंने भी है, शायद मेरे कागज़ों के भंडार में हो।' अटलजी ने विष्णुकांत जी से कहा, 'शास्त्रीजी वह कविता मिल जाती तो आज पढ़ने की इच्छा थी।' श्रद्धेय शास्त्रीजी ने मुझे आदेश दिया, 'घर जाकर खोजो, यदि मिल जायेगी तो उपयोग हो जायेगा।' अटलजी ने कहा, 'अटलजी ने कहा, 'अभी तो और कोई कार्यक्रम न्हीं है, शाम को ही आयोजन है, (फिर मेरी तरफ मुखातिब होकर कहा)-ऐसा करिए, अपना पूरा भंडार ही उठा लाइये-यहां खोज लेंगे।' मेरा पुराना आवास निकट ही था, लगभग 45 मिनट बाद मैं पुन: अपने कागज़ी पुलिंदे के साथ हाजिर हुआ। संयोग से वह कविता मिलने से वाजपेयी जी और शास्त्रीजी दोनों प्रसन्न हुए। कविता के संधान में ही वाजपेयी जी की नज़र उस डायरी पर पड़ी थी जिसकी चर्चा आरंभ में की जा चुकी है। वह कविता टंकित हुई और काव्य-पाठ के दौरान उसका उपयोग भी हुआ। कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित श्री अटल बिहारी वाजपेयी की काव्य-कृति 'अमर आग है' के द्वितीय संस्करण में जोड़ी गयी आठ कविताओं में उसे भी शामिल किया गया। 'संकल्प' शीर्षक कविता की अंतिम दो पंक्तियां हैं-

दाँव पर सब कुछ लगा है रुक नहीं सकते
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

कोलकाता में काव्य पाठ करते अटल बिहारी वाजपेयी। उनके दाएँ आचार्य विष्णुकांत शास्त्री और जुगल किशोर जैथलिया

अपने तेजस्वी विचारों को दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत करने के साथ विरोधियों को उदारता के साथ सुनने-समझने की सदाशयता अटलजी की खासियत रही है। जटिल राजनीतिक स्थितियों में भी वाजपेयीजी ने सहानुभूति एवं सामंजस्य के जिन गुणों को बरकरार रखा, उसे वास्तविक ऊर्जा प्रदान करता रहा है उनका कवि मन। उन्हीं की पंक्तियां हैं-

मनुष्य की पहचान/ उसके धन या सिंहासन से नहीं होती/उसके मन से होती है।
मन की फ़कीरी पर/ कुबेर की सम्पदा भी रोती है।

जटिल एवं नीरस राजनीतिक स्थितियों को भी अपनी वाक्पटुता तथा विनोदी-वृत्ति के कारण सरस बनाए रखने वाले कवि अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने आराध्य से प्रार्थना की थी-

मेरे प्रभु, मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना
गैरों को गले न लगा सकूं
ऐसी रुखाई कभी मत देना।

कोलकाता की साहित्यिक-सांस्कृतिक सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को यह गौरव प्राप्त है कि इसके तत्त्वावधान में पूर्व -प्रधान मंत्री तथा प्रखर राष्ट्रवादी कवि अटल बिहारी वाजपेयी का 'एकल काव्य पाठ' समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। टीवी चैनलों या समाचार-पत्रों में अटलजी के जिस ओजस्वी काव्य-पाठ की मुद्रा दिखायी पड़ती है, उनमें अधिकांश चित्र इसी समारोह के हैं। 13 अगस्त 1994 को सम्पन्न हुए इस अभूतपूर्व (अब ऐतिहासिक) अनुष्ठान का प्रभावी संचालन किया था प्रख्यात साहित्यकार तथा तत्कालीन राज्यसभा सांसद काव्य-मर्मज्ञ आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने। उस समय लोकसभा प्रतिपक्ष के नेता तथा देश के अत्यंत लोकप्रिय जननेता अटलजी का कार्यक्रम कैसे सुनिश्चित हो सका, यह अनहोनी सी लगने वाली घटना कैसे घट सकी-इसका भी रोचक प्रसंग है। 1993 ई. में कुमारसभा पुस्तकालय के वार्षिक अधिवेशन (कार्यसमिति के गठन) के अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए पुस्तकालय के शुभ चिन्तक महावीर प्रसाद नारसरिया ने कहा कि युवा पीढ़ी तथा आम जनता को राष्ट्रीय चेतना से उद्बुद्ध करने के लिए एक वृहद् राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाना चाहिए, यह काम कुमारसभा पुस्तकालय जैसी संस्था ही कर सकती है। संस्था के तत्कालीन अध्यक्ष श्री जुगल किशोर जैथलिया तथा उपस्थित सदस्यों को यह प्रस्ताव पसंद आया। संस्था की ओर से मुझे दायित्व दिया गया कि मैं आदरणीय विष्णुकान्तजी शास्त्री से परामर्श कर इसकी रूपरेखा सुनिश्चित करूं। मैंने गुरुवर शास्त्रीजी से इसकी चर्चा करते हुए यह भी जोड़ दिया कि यदि ऐसे कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय अटल बिहारी वाजपेयी करें तो समारोह और भी प्रभावी हो जायेगा।

अटलजी की व्यस्तताओं एवं राजनीतिक जिम्मेदारियों से परिचित होने के कारण शास्त्रीजी ने छूटते ही कहा-'इस आयोजन के लिए माननीय अटलजी को पकड़ना कठिन होगा।' लेकिन हम सबके अनवरत आग्रह के कारण शास्त्रीजी ने अटलजी से अध्यक्षता करने का निवेदन किया। प्रत्युत्तर में अटलजी ने कहा-'अध्यक्षता तो नहीं करूंगा लेकिन काव्य-प्रेमी यदि मेरी कविताएं सुनना चाहें तो उन्हें ज़रूर सुना सकता हूं।' इस प्रकार प्रस्तावित 'राष्ट्रीय कवि सम्मेलन' 'एकल काव्य पाठ' में रूपान्तरित हो गया।

इस कार्यक्रम के प्रति लोगों का रुझान अभूतपूर्व था। अटलजी के स्वर में उनकी अपनी कविताएं सुनने का आकर्षण ऐसा था कि कार्यक्रम के दिन अपार जनसमूह समागार के इर्द-गिर्द एकत्रित हो गया। खचाखच भरे समागार के बाहर 'क्लोज्ड सर्किट टीवी' तथा सड़क किनारे लगे माइक की व्यवस्था भी कम पड़ गयी। भीड़ को व्यवस्थित करने हेतु सभागार के मुख्य द्वार पर खड़े संस्था के मंत्री श्री महावीर बजाज का चश्मा टूट गया। लगभग सवा दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम में वाजपेयी जी ने अपनी विविध रंगी कविताओं को 6 भागों में विभाजित कर अत्यंत प्रभावी पाठ किया। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का सम्मोहक संचालन तथा वाजपेयीजी की विशिष्ट विरल मुद्राएँ इस अवसर को अविस्मरणीय बना गयीं। इसी दिन कुमारसभा पुस्तकालय ने अटलजी की कविताओं का संग्रह 'अमर आग है' भी प्रकाशित किया।

काव्य-पाठ के पूर्व वाजपेयीजी ने अपने विशिष्ट अंदाज़ में जो वक्तव्य प्रस्तुत किया, वह रोचक एवं अर्थपूर्ण है-'कोई दिल्लीवाला कलकत्ता महानगर में एकल कविता पाठ करने का निश्चय करे तो समझना चाहिए कि वह दुस्साहस कर रहा है। यह दुस्साहस मुझसे हो गया है। मैं नहीं समझता कि कविता पाठ करने के मेरे प्रस्ताव को मेरे मित्र इतनी गंभीरता से लेंगे। भाषण देने से बचने के लिए मैंने कविता पढ़ने का प्रस्ताव किया था। मैं समझता था कि वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन उन्होंने स्वीकार कर लिया और मैं अपने को इस कठिन परिस्थिति में पाता हूं। इस तरह से कविताएं मैंनें भारत में कहीं नहीं पढ़ी हैं।...... कविताएं मैं बचपन से लिखता रहा हूं, यह बात सच है। आदरणीय रज्जू भैया 1942 से मेरी कविताएं सुनते रहे हैं, मुझे प्रोत्साहन देते रहे हैं। जो कविता मैं पढ़ूंगा-'हिन्दू तन-मन हिन्दू जीवन...' वह मैंने 1942 में लिखी थी, जब मैं मैट्रिक का विद्यार्थी था और संघ के शिविर में भाग लेने के लिए लखनऊ गया था।...कविता से मेरा पुराना नाता है, मुझे कविता पैतृक विरासत में मिली है।' काव्य-लेखन का क्रम क्यों अवरुद्ध हुआ, इसकी भी चर्चा वाजपेयीजी ने आरंभिक वक्तव्य में की तथा 'राष्ट्रधर्म' के सम्पादन काल का भी परोक्ष रूप में उल्लेख किया। उन्होंने कहा-' संख्या में कविताएं मैंने बहुत कम लिखी हैं। क्योंकि किसी योजना के अनुसार मुझे संपादन के काम में लगा दिया गया। जहां प्रतिदिन गद्य लिखना पड़ता है, वहां काव्य-रचना नहीं हो सकती। फिर प्रतिदिन भाषण देने के काम में लगा दिया गया। कवि को समय चाहिए, उपयुक्त वातावरण चाहिए, एक भाव-दशा चाहिए।.... उमड़े-घुमड़े तब बरसे तो जोर से बरसेगा। खाली गर्जन होगा तो रस की सृष्टि नहीं होगी।... मेरी कविताएँ मुझसे ज्यादा मेरे मित्रों को याद हैं। मेरी कविताएं बिखरी पड़ी हैं, उन्हें एकत्र करके पाठ किया जाय-वह भी एकल पाठ। कितनी कविताएं होंगी ? कितनी देर पाठ चलेगा ? ये ऐसे प्रश्न थे जो उत्तर न मिलने की दशा में अनुत्तरित पड़े थे। लेकिन कलकत्ता के मित्रों ने मुझे इन सब प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के लिए विवश कर दिया। इसमें शास्त्रीजी ने जो मेरी सहायता की है, इसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ।.... फिर किसी मित्र ने जोर लगाकर कोशिश की है कि कविताएँ छपनी भी चाहिए। आज एक पुस्तिका भी निकली है,जिसमें मेरी कविताएं हैं।' इस 'एकल काव्य-पाठ' के पूर्व माननीय अटलजी ने आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के साथ बैठकर विषय के अनुरूप रचनाओं का विभाजन किया और छ: दौर में काव्य-पाठ किया। प्रथम दौर में 'शौर्यपूर्ण कविताएँ'; दूसरे दौर में व्यंग्य की रचनाएँ (कैदी कविराय की कुण्डलियां); तीसरे दौर में कोमल एवं करुण कविताएँ; चौथे में विचार केन्द्रित कविताएँ; पांचवें में सामाजिक रचनाएँ तथा छठे एवं अन्तिम दौर में राष्ट्रीय भावापन्न कविताएं पढ़ी गयीं। हर दौर के पहले विष्णुकान्तजी की भावपूर्ण टिप्पणियाँ तथा दूसरे कवियों की समानान्तर पंक्तियाँ काव्य-पाठ को सरसता एवं रोचकता प्रदान करती रहीं। इस अवसर पर कुमार सभा पुस्तकालय द्वारा अटलजी की कविताओं का संकलन 'अमर आग है' प्रकाशित हुआ जो व्यवस्थित रूप से प्रकाशित उनका पहला काव्य-संकलन है। बाद के वर्षों में 'मेरी इक्यावन कविताएं' शीर्षक काव्य संग्रह अन्य प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित हुआ। इस प्रकार कुमार सभा पुस्तकालय की पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर आयोजित कौस्तुभ जयन्ती समारोह अविस्मरणीय एवं अभूतपूर्व बन गया। इस आयोजन की स्मृति आज भी प्रत्यक्षदर्शियों को अपूर्व आनंद एवं पुलक से भर देती है।

भाषा और साहित्य एक-दूसरे के पूरक

'प्रवासी संसार' के संपादक राकेश पांडेय से 'बहुवचन' के संपादक अशोक मिश्र की बातचीत

विश्व हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस को लेकर आप क्या सोचते हैं?

पूरे विश्व में जहाँ भी हिंदी है वहाँ पर भारतीय संस्कृति है। इसी मूल भावना के साथ इस सम्मेलन को आयोजित किया जा रहा है। मॉरीशस इस संदर्भ में एक विशेष स्थान रखता है। यहाँ पर हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाएँ और संस्कृतियाँ भी विद्यमान हैं। इसीलिए मॉरीशस में विश्व हिंदी सम्मेलन का तीसरी बार होना एक महत्वपूर्ण घटना है। यहाँ पर यह सम्मेलन लंबे समय तक भारतीय संस्कृति की जड़ों को और भाषा को सुदृढ़ करेगा।

प्रवासी साहित्य को किस दृष्टि से देखते हैं और इस दिशा में क्या काम हुआ है?

प्रवासी हिंदी साहित्य आज मूलधारा का साहित्य है। अनेक विश्वविद्यालयों में इसके ऊपर शोध हो रहे हैं। अनेक शोध कार्य इस अनेक प्रकार के विषयों को लेकर हो रहे हैं जिससे प्रवासी हिंदी साहित्य एक नए आयाम की ओर बढ़ रहा है। जिस प्रकार से गिरमिटिया देशों में हिंदी के लोक साहित्य के ऊपर बहुत काम हुआ है। उस पर अभी शोध होना बाकी था वह कार्य प्रवासी हिंदी के विषयों को उठाकर किया जा रहा है इससे अनेक विश्वविद्यालयों जो कि कल भारत के ही नहीं है अपितु भारत के बाहर के विश्वविद्यालय में भी प्रवासी हिंदी साहित्य पर हो रहा है और यह एक लंबी प्रक्रिया है जिस पर कि अभी बहुत सा काम होना बाकी है। इस संदर्भ में आपका विश्वविद्यालय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

हिंदी भाषा और साहित्य को एक दूसरे से अलग कर देखा जा सकता है इस पर आपकी राय?

भाषा और साहित्य दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। भाषा शरीर है और साहित्य आत्मा है। दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है। जब कोई साहित्यकार अपनी रचनात्मक दृष्टि से साहित्य रचता है तो भाषा उसे स्वरूप देती है। इसलिए भाषा और साहित्य को अलग नहीं किया जा सकता है। सबसे बड़ा उदाहरण आप रामचरितमानस का ले सकते है तुलसीदास ने राम के भाव को अवधी भाषा में व्यक्त किया। क्या आप उसको किसी अन्य रूप से देख सकते हैं। इसलिए भाषा और साहित्य को अलग-अलग दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है।

अब तक 11 विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं, भविष्य में हिंदी भाषा को लेकर किन कार्यों की आवश्यकता है?

विश्व हिंदी सम्मेलन की मूल भावना वसुधैव कुटुंबकम की थी, यही केंद्रीय विषय था। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में ही भाषा के साथ पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति के रूप में जोड़ने की परिकल्पना की गई थी। विश्व हिंदी सम्मेलन केवल एक प्रयास है, हिंदी को विश्वव्यापी बनाने का। अकेले सम्मेलन करना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि हिंदीभाषी स्वयं में इसे भावना और रोजगार के साथ ना जोड़ें। आज सबसे अधिक आवश्यकता युवा पीढ़ी को हिंदी के साथ जोड़कर उसे रोजगार की भाषा बनाने की भी है

विश्व हिंदी सम्मेलन की देन है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा में साकार होता एक स्वप्न

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

हिंदी भारत में बोली और समझी जाने वाले न केवल एक प्रमुख भाषा है बल्कि यहाँ की संस्कृति, मूल्य और राष्ट्रीय आकांक्षाओं का व्यापक स्तर पर प्रतिनिधित्व भी करती है। इसका अस्तित्व उन सुदूर देशों में भी है जहाँ भारतीय मूल के लोग रहते हैं। संख्या बल की दृष्टि से हिंदी का विश्व भाषाओं में ऊंचा स्थान है। महात्मा गांधी हिंदी को 'प्यार और संस्कार की भाषा' कहते थे। उनकी मानें तो 'इसमें सबको समेट लेने की अद्भुत क्षमता है'। हिंदी 'अपने आप में बहुत मीठी, नम्र और ओजस्वी' भाषा है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने पूरे भारत को जोड़ने का काम किया था। यद्यपि इसे जनमानस में राष्ट्र भाषा का गौरव मिला था भारत के संविधान में इसे 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया गया। साथ ही, यह प्रावधान भी किया गया कि अंग्रेजी का प्रयोग तब तक चलता रहेगा जब तक एक भी राज्य वैसा चाहे। ऐसी स्थिति में, उल्लेखनीय साहित्यिक विकास के बावजूद जीवन के व्यापक कार्य क्षेत्र और ज्ञान–विज्ञान की भाषा के रूप में हिंदी को वह स्थान नहीं मिल सका जिसकी वह हक़दार है। इस परिप्रेक्ष्य में 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का संकल्प लिया गया। बाइस वर्ष बाद 1997 में भारतीय संसद के विशेष अधिनियम क्रमांक 3 के अंतर्गत वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। इस प्रकार इस संस्था की स्थापना का प्रमुख श्रेय विश्व हिंदी सम्मेलन को जाता है। विश्वविद्यालय ने न्यूयार्क, जोहान्सबर्ग और भोपाल में सम्पन्न विगत तीन विश्व हिंदी सम्मेलनों में प्रमुख दायित्व निभाया और उनके प्रतिवेदन तैयार कर प्रकाशित किए।
वर्धा का यह केंद्रीय विश्वविद्यालय हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्धन और विकास के लिए एक बहु आयामी उपक्रम के रूप में आरम्भ हुआ। इसके अंतर्गत हिंदी-शिक्षण, अनुसन्धान, अनुवाद, भाषा विज्ञान, तुलनात्मक अध्ययन, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अध्ययन के विभिन्न विभागों में शिक्षण और अनुसंधान, विदेशों में हिंदी की अध्ययन और दूर शिक्षा द्वारा हिंदी अध्ययन का प्रोत्साहन, देश और विदेश में सूचना के विकास और प्रसारण की व्यवस्था को शामिल किया गया। हिंदी के भूगोल को विस्तृत करने और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से समृद्ध करने के लिए विश्वविद्यालय कृतसंकल्प है। वर्धा की पंचटीला नामक पहाड़ी पर इस विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए स्थान मिला और वर्ष 2000 से शैक्षणिक गतिविधियाँ आरम्भ हुई। उच्च शिक्षा के किसी शैक्षिक केंद्र का निर्माण एक समयसाध्य चुनौती है। अपने बीस वर्ष की जीवन अवधि में यह विश्वविद्यालय अनेक दिशाओं में अग्रसर है। यह मानते हुए कि हिंदी के संवर्धन के लिए बहुमुखी उपाय आवश्यक हैं। यह विश्वविद्यालय अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त अनेक प्रासंगिक कार्यों में भी अनवरत रूप से संलग्न है। हिंदी को केंद्र में रख कर ज्ञान के विस्तार के लिए यह विश्वविद्यालय बहुमुखी योजनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। इसमें प्रमुख हैं : अध्ययन – अध्यापन, कोश-निर्माण, भाषा प्रौद्योगिकी का विकास, भाषाई प्रशिक्षण, अध्ययन सामग्री का निर्माण, शोध कार्य तथा साहित्य का प्रकाशन, शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन, अतिथि लेखकों की उपस्थिति , संस्कृति-संवर्धन के प्रयास तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार। भोपाल का 10 वां विश्व हिंदी सम्मलेन इन सभी क्षेत्रों में विश्वविद्यालय की विकास यात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ।
हिंदी न केवल भाषा है बल्कि भारतीय संस्कृति, ज्ञान और लोक-परंपरा को भी धारण करती है। इस पृष्ठभूमि में विश्वविद्यालय की संकल्पना हिंदी

को ज्ञान की भाषा के रूप में स्थापित करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को माध्यम बनाकर ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक विश्वस्तरीय ज्ञान-केंद्र के रूप में की गई थी। व्यावहारिक रूप में यह विश्वविद्यालय अध्ययन-अध्यापन और शिक्षण के अतिरिक्त हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रकाशन, सांस्कृतिक संवाद और साहित्य-संकलन तथा उसके संरक्षण का भी कार्य करता है। इसका जीवंत परिसर अनेक दृष्टियों से सक्रिय है। भाषा की दृष्टि से हिंदी को सबल बनाने के लिए और उसमें आ रही दुर्बलताओं को दूर करने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक विशेष योजना तैयार की है कि हिंदी भाषा के उत्थान के लिए, अध्यापकों के लिए, छात्रों के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री तैयार की जाए। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है भिन्न-भिन्न विषयों में हिंदी की मानक पुस्तकें तैयार करने का ताकि हिंदी ज्ञान-विज्ञान और विचार-विमर्श की एक समर्थ भाषा बन सके। इस दृष्टि से कार्य प्रगति पर है। तीसरा क्षेत्र है भाषा-प्रयोग के लिए सॉफ्टवेयर निर्माण का। आज यदि हम कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करना चाहते हैं तो डिजिटल फॉर्म में सारी चीजें मिलनी चाहिए। इसे ध्यान में रख कर प्रयास किया जा रहा है कि हम तकनीकी दृष्टि से भी हिंदी को सबल बनाएं। विश्व हिंदी सम्मेलन के अंतर्गत एक संकल्प लिया गया था कि कानून की शिक्षा हिंदी माध्यम से दी जाए। हमारे विश्वविद्यालय में कानून की शिक्षा का प्रस्ताव भी तैयार हुआ है। इसके लिए आवश्यक कार्रवाई आरम्भ की गई है। यह विश्वविद्यालय बहुआयामी है और हिंदी जगत को इससे बड़ी अपेक्षाएँ हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसकी समृद्धि के प्रति विश्वविद्यालय गम्भीर और उसके प्रति समर्पित है। यहाँ के विद्यार्थी और अध्यापक इस कार्य में मनोयोग से लगे हुए हैं यह संतोष की बात है। फिर भी, बहुत कुछ करना शेष है। हमारा स्वप्न है कि यह विश्वविद्यालय एक विश्व स्तरीय उच्च संस्थान का रूप धारण करे। यदि सामान्य रूप से हम विचार करें तो हमारी आवश्यकता है कि हम देशज विचारों और समस्याओं के देशज समाधान की ओर ध्यान दें। अपने देश की संस्कृति, परिस्थिति, सामाजिक ताना-बाना इन सबको ध्यान में रखकर अध्ययन होना चाहिए। अभी तक हमारे अध्ययन प्रायः उन्हीं सिद्धांतों और कार्यों को ध्यान में रखकर किये जाते रहे हैं जो कि पश्चिम के अपेक्षाकृत विकसित देशों में किए गए हैं। सामाजिक विज्ञानों में या मानविकी के विषयों में इस प्रकार का दृष्टिकोण बहुत लाभदायक नहीं है क्योंकि इस प्रकार का जो अनुकरण वाला कार्य है वह हमारी अपने समाज की समझ को बहुत अधिक स्पष्ट नहीं करता। गांधी जी की चेतावनी कि हमारी अपनी जमीन में हमारे पैर गड़े होने चाहिए, हमारे मकान की खिड़कियां खुली होनी चाहिए, बाहर की हवा आए और हम उसको ग्रहण करेंगे, लेकिन यह नहीं कि हम बिलकुल बदल जाएँ। यह तो शायद आत्मघाती कदम होगा और यह विचार करने का प्रश्न है कि किस प्रकार हम संतुलन स्थापित कर सकते हैं। यह आवश्यक है कि हम अपने स्वभाव, अपने स्वधर्म के विषय में एक समझदारी विकसित करें। हम अपने मूल से जीवन ग्रहण कर सकते हैं। हमें अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए और सांस्कृतिक विवेक की परिपक्वता पाने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें विश्वास है कि यह संस्था इस दिशा में सक्रिय होगी।

जनसमूह को लुभाती प्रदर्शनी

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रवेश द्वार के दोनों ओर नयनाभिराम रंग बिरंगी किताबों से भरे कई स्टाल जनसमूह के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। यहाँ मॉरीशस और भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसे समृद्ध बनाने की दिशा में सलंग्न प्रमुख सरकारी संगठनों और हिंदी के प्रमुख प्रकाशकों की प्रवासी साहित्य और मॉरीशस के साहित्यकारों से संबंधित पुस्तकें हिंदी की अनुपम छटा प्रदर्शित कर रही हैं। हिंदी के शिक्षण में संलग्न महात्मा गांधी व रवीन्द्रनाथ संस्थान मॉरीशस का भाषा संसाधन केंद्र हिंदी शिक्षण व पाठय पुस्तकों के प्रकाशन और संगीत की कक्षाओं के संचालन के साथ-साथ संस्कृति के विकास में संलग्न है। विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित प्रस्ताव से जन्मे विश्व हिंदी सचिवालय के स्टाल पर मुख्य रूप से अंतर्जाल पर प्रवासी लेखकों का परिचय प्रदर्शित है तथा सचिवालय से प्रकाशित विश्व हिंदी पत्रिका और विश्व हिंदी समाचार के अंक प्रदर्शित किए गए हैं। सचिवालय संपूर्ण विश्व में हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने की दिशा में कार्यरत है।
सीडैक (पुणे) तकनीकी क्षेत्र में लगातार कार्य कर रहा है। संस्थान जीवित भाषाओं के पोषण के लिए लिखावट आधारित हिंदी टाइपिंग उपकरण व एंड्रायड प्लेटफार्म पर भारतीय भाषाओं के लिए एकीकृत आभासी की बोर्ड, जिस्ट खोज इंजन सहित तकनीकी के क्षेत्र में विविध कार्यों को अंजाम दिया जा रहा है। भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास कार्यक्रम (टीडीआईएल) मशीनी अनुवाद से संबंधित तकनीक का विकास कर रहा है। इसके साथ ही टेक्स्ट टू स्पीच (टीटीएस) के माध्यम से हिंदी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़ एवं गुजराती आठ भारतीय भाषाओं के लिए मोजिला एवं क्रोम ब्राउजर के लिए ब्राउजर प्लग इन के रूप में टेक्स्ट टू स्पीच प्रणालियां विकसित की गई हैं

और उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रिया के आधार पर इन्हें टीडीआईएल सेंटर की वेबसाइट –WWW. tdil.-dc.in पर उपलब्ध है।
विकिपीडिया जो कि एक मुक्त ज्ञानकोश है। महत्वपूर्ण है कि इंटरनेट पर हिंदी के प्रचार प्रसार में विकिपीडिया पहले स्थान पर है। विकिपीडिया के स्टाल पर जानकारी दी जा रही है कि कोई भी व्यक्ति विकिपीडिया पर पहले से उपलब्ध सामग्री संपादित कर सकता है। विकिपीडिया पर गंगा नदी, महादेवी वर्मा, महाभारत, विश्व हिंदी सम्मेलन सहित सैकड़ों विषयों पर महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध है।
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के स्टाल पर विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित बहुवचन का विशेषांक और पुस्तक-वार्ता के नवीनतम अंक उपलब्ध हैं। साहित्यकारों की दुर्लभ अप्राप्य पांडुलिपियां लेखकों की हस्तलिपि में प्रदर्शित है। वर्धा हिंदी शब्दकोश भोजपुरी, हिंदी, अंग्रेजी शब्दकोश, प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी सहित एक दर्जन से अधिक नई पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं।
प्रदर्शनी में साहित्य अकादेमी के स्टाल पर उपस्थित देवेन्द्र कुमार देवेश ने जानकारी दी कि हम यहाँ हिंदी लेखकों के मोनोग्राफ एवं मॉरीशस का सृजनात्मक साहित्य, मॉरीशस की हिंदी कहानियां, सूरिनाम का सृजनात्मक साहित्य, फिजी का सृजनात्मक साहित्य व हिंदी लेखकों के मोनोग्राफ, देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास, विद्यानिवास मिश्र संचयन आदि सहित सैकड़ों महत्वपूर्ण पुस्तकें व समकालीन भारतीय साहित्य का नया अंक प्रदर्शनी में उपलब्ध हैं। पुस्तक संस्कृति के प्रसार में संलग्न नेशनल बुक ट्रस्ट से संबंधित दीपक मंजुल के अनुसार, प्रदर्शनी में ट्रस्ट से प्रकाशित सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें, प्रवासी साहित्य, सहज समानांतर कोश, बाल साहित्य आदि का प्रदर्शन किया गया है।
माइक्रोसाफ्ट के स्टाल पर उपस्थित तकनीकी विशेषज्ञ बालेंदु दाधीच ने बताया कि हिंदी में नई तकनीक को अपनाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए। कृत्रिम मेधा, बिग डेटा विश्लेषण जैसी तकनीकों को अपनाकर हिंदी को आधुनिक भाषाओं की श्रेणी में लाने की जरूरत है। इस संबंध में माइक्रोसाफ्ट ने अपने स्टाल पर ऐसी कई तकनीकी का प्रदर्शन किया जो कि कृत्रिम मेधा पर आधारित है। इस तकनीकी में मशीनी अनुवाद, कंप्यूटर की दृष्टि, ध्वनि से ध्वनि अनुवाद आदि का व्यावहारिक प्रदर्शन किया है। उन्होंने बताया कि माइक्रोसाफ्ट के उत्पादों को अब पूरी तरह हिंदीकृत करना संभव है जिसमें विंडोज और आफिस शामिल है। इसके साथ एम.एस. वर्ड, पावर-प्वाइंट, एक्सेल आदि में हिंदी वर्तनी जाँच, समानार्थक शब्दावली, आटो करेक्ट, अनुवाद, हिंदी खोज तथा हिंदी में हेल्प आदि की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त कला एवं संस्कृति मंत्रालय (मॉरीशस), हिंदी प्रचारिणी सभा (मॉरीशस), हरियाणा ग्रंथ अकादमी, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, डायमंड पाकेट बुक्स, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, प्रभात प्रकाशन, किताबघर प्रकाशन, रामपुर रजा लाइब्रेरी, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय सहित लगभग तीस से अधिक प्रदर्शनियां जनसमूह के आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

मॉरीशस के तीर्थ में सरस्वती जल

पोर्ट लुई। हिन्द महासागर के द्वीप देश मॉरीशस के प्रसिद्ध तीर्थ गंगा तालाब पर शुक्रवार की संध्या विशेष गंगा आरती के बाद सामाजिक कार्यकर्ता एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्रो. अजय श्रीवास्तव ने तीर्थ के पवित्र जल में पौराणिक नदी सरस्वती का पवित्र जल विधिपूर्वक मिश्रित किया। मॉरीशस के प्रसिध्द लेखक प्रह्लाद रामशरण ने इसे एक ऐतिहासिक अवसर बताया।
इस अवसर पर मॉरीशस के अनेक गणमान्य लोगों के अलावा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बलदेव भाई शर्मा, मेघालय केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस के श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी के संचालक प्रो. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी, भारतीय भाषा आन्दोलन के महासचिव हरपाल सिंह राणा और लेखिका मृदुला श्रीवास्तव ने भी सरोवर में सरस्वती जल मिश्रित किया। सरस्वती जल हरियाणा सरकार के सरस्वती नदी धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज के सौजन्य से लाया गया था।
गंगा तालाब पर विशेष गंगा आरती का नेतृत्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण जगन्नाथ को करना था लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के कारण सुषमा स्वराज की अनुपस्थित में गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा,पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी और विदेश राज्यमंत्रियों वी.के. सिंह तथा एम.जे. अकबर ने गंगा आरती का नेतृत्व किया। इस अवसर पर मॉरीशस का हिंदी समाज और विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने आए करीब दो हजार प्रतिनिधि उपस्थित थे।
मॉरीशस के विख्यात लेखक प्रह्लाद राम शरण ने कहा कि इस द्वीप देश के हिन्दुओं के लिए यह एक भावनात्मक क्षण है। इस द्वीप देश में गंगा तालाब का महत्व वही है जो भारत में गंगा का है। यहां भगवान शिव की विशालकाय प्रतिमा और अनेक मन्दिर हैं। गंगा तालाब में पवित्र सरस्वती जल का मिश्रित किया जाना ऐतिहासिक घटना है।

लोक में व्यक्ति नहीं, समाज महत्वपूर्ण : प्रो. गिरीश्वर मिश्र

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति तथा देश के जाने माने मनोविज्ञानी और भारतीय संस्कृति के भाष्यकार प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के भाषा और संस्कृति के अंत:संबंध विषयक सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्कृति और भाषा का बड़ा गहरा रिश्ता है। इस रिश्ते को समझने के लिए इस तरह कह सकते हैं कि संस्कृति एक प्राणी है और भाषा उसका प्राण। भाषा के माध्यम से संस्कृति जीवित होती है। वे अभिमन्यु अनत सभागार में बीज वक्तव्य दे रहे थे। उन्होंने कहा कि लोक भाषा सबको मीठी लगती है। हिंदी मूलत: लोकभाषा है। अवधी, ब्रज, हरियाणवी, भोजपुरी से लिए हुए शब्दों के बिना हिंदी कैसे चल सकती है। बोलियों के सौंदर्य से ही ठेठ हिंदी का ठाठ निर्मित हुआ है। उन्होंने कहा कि हिंदी एक परिवार को व्यक्त करने वाली भाषा है। उसमें नाना तरह की बोलियाँ और उपभाषाएँ हैं। कबीर, सूर, तुलसी और जायसी का साहित्य लोक का भी है और शास्त्रीय भी। उसमें पूरे जीवन की व्याख्या मिलती है। उनमें बहुत कुछ टटका है। प्रो. मिश्र ने कहा कि लोक को गँवार कहा जाता है, पिछड़ा समझा जाता है किंतु वास्तव में वह वैसा नहीं है। वहाँ कृत्रिमता कम दिखती है। जो भी दृष्टिगोचर जगत है वह लोक को परिभाषित करता है। उन्होंने कहा कि शास्त्र कई बार लोक से उदाहरण देता है। तब लोक शास्त्र का निकष हो जाता है। लोक के लिए जन शब्द भी प्रयोग किया जाता है। जन का सारा व्यवहार और आचार समूह में प्रकट होता है। गाँव के लोग आज भी समूह में भोजन करना पसंद करते हैं। उन्होंने कहा कि सबके जीवन के साथ ही हमारा जीवन बचेगा, अकेले नहीं। लोक दूसरे की चिंता करता है। लोक संस्कृति हमारे जीवन का अंश है। लोक जीवन आज भी लोकगीत, लोक नृत्य से गहरे जुड़ा है। लोक संस्कृति का विस्तार अब शहरों तक में देखा जा सकता है। खासतौर पर छठ पूजा जैसे आयोजनों में। प्रो. मिश्र ने कहा कि लोक की परंपरा हमारी स्मृति से जुड़ती है। लोक में व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है। लोक में समाज महत्वपूर्ण है। लोक में बहुत कुछ अनाम है, जो सामूहिक स्मृति, संस्कृति

एवं परंपरा का परिचायक है। डॉ. मृदुल कीर्ति ने सभा के समक्ष अपने विचार रखते हुए भाषा के विभिन्न आयामों की चर्चा की। उन्होंने भाषा एवं संस्कृति के अंत:संबंधों की यात्रा पर चर्चा की। भाषा को परिभाषित करते हुए उन्होंने उसे विचारों की संवाहिका के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शब्द अर्थ निमित्त है न कि अर्थ शब्द निमित्त। समय के साथ निश्चय ही भाषा में परिवर्तन हुआ है, परंतु अपने मूल तत्वों में लोक में वह आज भी विद्यमान है। सांस्कृतिक मूल्यों को आज भी हमारे ग्रंथ थामे हुए हैं। भाषा के तत्सम एवं तद्भव को संभाले हुए लोक-संस्कृति आज भी अपनी भूमिका निभा रहा है।

डॉ. सरिता बुधू ने विभिन्न गीतों, मुहावरों एवं कहावतों का उदाहरण देते हुए गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्षों को विशद रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जो लोग मजदूरों के रूप में 'मारिच' प्रदेश (वर्तमान नाम मॉरीशस) में आए उन्होंने अपने साथ लाए हनुमान चालीसा, रामायण और लोक कथाओं के माध्यम से इस देश में अपनी परंपरा और संस्कृति को स्मृतियों में संजो कर रखा। लोक गीत, लोक कला, रीति-रिवाज, सुभाषितानी सारी चीजें वे अपने साथ ही ले आए थे। यही सारे संस्कार गीत मॉरीशस की धरोहर बन गए हैं और मॉरीशस सरकार ने उसे विश्व धरोहर के रूप में भेजा, जिसे धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। डॉ. पूर्णिमा ने अपने वक्तव्य में लोक संस्कृति की चर्चा करते हुए कहा कि जब हम लोक की बात करते हैं तो हम ग्रामीण परिवेश की बात करते हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति का लोक आज विश्वव्यापी हो चुका है। जो प्रवासी भारतीय विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं, हमें उनके बारे में भी बात करनी चाहिए। हिंदी भाषा का विकास भी विभिन्न बोलियों, लोक संस्कृतियों का संगम है। केवल शब्द ही नहीं, बल्कि मुहावरे भी लोक का हिस्सा हैं जो किसी समृद्ध भाषा के अंग बन जाते हैं। यह लोक संस्कृति एवं भाषा के अंतर्संबंधों को दर्शाता है। भाषा एवं लोक संस्कृति के अंत:संबंध सत्र की अध्यक्षता गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदुला शर्मा कर रही थीं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने भाषा एवं लोक संस्कृति के अंत:संबंधों पर प्रकाश डालते हुए दोनों के बीच अनिवार्य संबंध बनाए रखने एवं उसे लगातार समृद्ध करते रहने पर बल दिया।

संस्कृति का प्रवाह अविच्छिन्न : नरेंद्र कोहली

गोस्वामी तुलसीदास नगर,18 अगस्त। ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन के पहले दिन गोपाल दास

नीरज कक्ष में 'हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक चिंतन' विषय पर चौथे समानांतर सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजरानी गोबिन ने की। बीज वक्ता डॉ. नरेन्द्र कोहली ने अपने वक्तव्य में संस्कृति के प्रवाह को अविच्छिन्न मानते हुए हिंदी की पूर्ववर्ती भाषाओं का ऋण स्वीकार किया। तुलसीदास के महाकाव्य 'रामचरितमानस' के सांस्कृतिक संदर्भों की विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने आज उनकी प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। इसके साथ ही उन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, निराला, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर तथा दिनकर की रचनाओं के सांस्कृतिक आयामों पर प्रकाश डाला। डॉ. पी. के. हरदयाल का वक्तव्य भी 'रामचरितमानस' पर केन्द्रित था। सत्र के सह-अध्यक्ष डॉ. हरीश नवल ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वही रचनाएँ महत्त्वपूर्ण बनती हैं जो सांस्कृतिक चिन्तन के उपादान बनने की क्षमता से युक्त होती हैं। इस सत्र के अगले भाग में डॉ. स्वर्ण अनिल, डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय, डॉ. रंजना, डॉ. राजेश श्रीवास्तव, डॉ. सत्यकेतु, डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय, डॉ. सदानन्द गुप्त, डॉ. उदयप्रताप सिंह ने विषय के विविध पक्षों को अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित करने का प्रयास किया। इस सत्र में श्री अभिराम की पुस्तक 'बाल गन्धर्व' तथा दो पत्रिकाओं 'साक्षात्कार' एवं 'हिंदुस्तानी' के नए अंक का विमोचन किया गया।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के पहले दिन सत्र में उपस्थित प्रतिभागी

तुलसीदास से नीरज तक को ऐसे दिया सम्मान

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत और मॉरिशस के सभी बड़े हिंदी सेवियों को अनोखे तरीके से सम्मान दिया गया है। जहां सम्मेलन हो रहा है, उस स्थान को तुलसीदास नगर नाम दिया गया है। मुख्य हॉल का नामकरण भारत के बाहर बड़े हिंदी सेवी माने जाने वाले अभिमन्यु अनत के नाम पर किया गया।

विचार मंथन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हाल में होगा। गोपाल दास नीरज और मणिलाल डॉक्टर के नाम पर भी स्थानों का नामकरण किया गया है। प्रदर्शनी स्थल को रायकृष्ण दास का नाम दिया गया है। कोशिश की गई है कि हिंदी के हर बड़े नाम को सम्मान मिल सके।

जगन्नाथ ने की मोदी के हिंदी प्रेम की प्रशंसा

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने अपने उद्घाटन भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हिंदी प्रेम की खासतौर पर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी में भाषण देकर मोदी ने बता दिया कि वह अपनी भाषा को कितना सम्मान देते हैं। उन्होंने और सुषमा स्वराज ने अपने संबोधन में स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के संयुक्त राष्ट्र सभा में हिंदी में दिए गए भाषण की भी याद दिलाई।

शास्त्रीय मूल्य शाश्वत होते हैं: सुरेंद्र गंभीर

गोस्वामी तुलसीदास नगर, 18 अगस्त। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के तीसरे सत्र का विषय था हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति । इस सत्र की अध्यक्षता उदय नारायण गंगू ने की। सत्र के आरंभ में बीज वक्तव्य देते हुए सुरेंद्र गंभीर ने कहा कि शास्त्रीय मूल्य शाश्वत होते हैं। विदेशी विद्यार्थी के मन में तमाम जिज्ञासाएँ होती हैं और वह उनके बारे में जानना चाहता है। संसार की भाषाओं का अनेक प्रकार से वर्गीकरण किया गया है । प्रथम वर्ग में अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मनी, चीनी, जापानी, अरेबिक, हिब्रू द्वितीय में हिंदी, भोजपुरी, अवधी आदि। लेकिन बड़ी और छोटी दोनों भाषाओं में संस्कृति सुरक्षित है। अमेरिका में सभी शैक्षिक विषयों के मानक पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं। विदेशी भाषा शिक्षण के अंतर्गत 5 सी आते हैं। ये हैं -कम्यूनिकेशन, कल्चर, कनेक्शन, कम्पेरिजन और कम्यूनिटीज। इन सबको समेकित किया जाता है। अमेरिका में लगभग सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिंदी सीखने की अलग अलग रुचियाँ और वर्ग हैं। वहाँ भाषा ज्ञान को मापने का एक परीक्षण किया जाता है। संस्कृति की छोटी छोटी बातों को विद्यार्थियों को बताना पड़ता है। बोलचाल की भाषा और औपचारिक भाषा अलग-अलग होती है। इसे भाषा द्वैत कहा जाता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक विनिमय बढ़ा है। दूसरे वक्ता श्री स्वीडन से आये हैंस वेसलर वेज ने कहा कि आज हम बहु संस्कृति

की दुनिया में रहते हैं। हर जुबान में एक खजाना है। हिंदी खतरे में नहीं है। जर्मनी और फ्रांस में मूल निवासी हिंदी सीखते हैं। व्यक्ति का अनुभव समूह का अनुभव होता है। उन्होंने यह भी कहा कि अलग-अलग भाषाओं की अलग-अलग संस्कृति होती है। हिंदी के छात्र मेहनत करने के लिए तैयार हैं। इस सत्र में आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि विदेशों में भाषा अध्यापन के रूप हैं- सैद्धांतिक और व्यावहारिक। विद्यार्थियों को पहले संस्कृति का व्यावहारिक ज्ञान देना चाहिए तथा उसके बाद सैद्धांतिक। यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थियों को फिल्मों कविताओं, गीतों और नाटकों के माध्यम से भाषा ज्ञान कराना चाहिए। जापान में अध्यापक रहे प्रो. हरजेंद्र चंद्र ने कहा कि विदेशियों को भारतीय संस्कृति के बारे में बताना बहुत सरल नहीं है। उन्हें अर्थ समझाना पड़ता है। इस दृष्टि से नाटकों की सहायता ली जा सकती है। प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने संस्कृत का सहारा लेने की बात की और प्रो. अतुल कोठारी ने भारतीय आध्यात्मिकता पर बल देते हुए पुरुषार्थों व धर्म के बारे में विद्यार्थियों को बताने पर बल दिया। प्रो. विमिलेश कांति वर्मा ने कहा कि भारत और मॉरीशस दोनों देश कृतसंकल्प हैं कि हिंदी की प्रगति हो। उन्होंने कहा कि साहित्य से अधिक भाषा पर बल दिया जाना चाहिए। उनका मानना था कि अध्यापकों का भाषा शिक्षण का प्रशिक्षण देना चाहिए। श्रीवर्मा ने यह भी कि डायस्पोरा के देशों के द्वारा ही हिंदी का संरक्षण हो सकेगा। सत्र का कुशल समन्वयन प्रो. नंद किशोर पाण्डेय ने किया। इस सत्र में 19 वक्तव्य हुए जिनमें मुख्य रूप से प्रो. जी. गोपीनाथन, प्रो. वेंकटेश्वर मन्नार प्रमुख थे।

मुद्रक: काते प्रिंटिंग लि., मॉरीशस
प्रकाशक: विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस
संपादक: प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादन-सहयोग: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र), भारत